Umang Sachan B.A. II Content (SKJLDC11)

दुष्यन्त का चरित्र-चित्रण — 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' नाटक का नायक पात्र राजा दुष्यन्त है, जो पृथ्वी-पति सम्राट है। इसका दूसरा नाम 'दुष्मन्त' भी है। नायक के रूप में उसके व्यक्तित्व का आकलन हम इस श्लोक से सरलतापूर्वक कर सकते हैं—

'महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।
स्थिरो निगूढाऽहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः॥

(1) महासत्त्व— दुष्यन्त रूपवान्, क्षत्रियकुलोचित मर्यादायुक्त, शारीरिक एवं आध्यात्मिक बल से युक्त है। वह स्वयं कहता है - 'समुद्र-रसना चोर्वी' कि मेरी एक पत्नी समुद्र पर्यन्त पृथ्वी है। भूलोक से स्वर्ग तक उसका प्रताप है। इसके सतोगुनी होने से राज्य में कोई भी व्यक्ति निरंकुश नहीं है। इसके महासत्त्वगुण को कवि ने इस प्रकार उद्धृत किया है - 'मृगानुसारिणं साक्षात् पश्यामीव पिनाकिनम्' (1|6). साधु पुरुषों की रक्षा तथा दुष्टों का विनाश करना इनका सहज स्वभाव है। वैखानस दुष्यन्त को आश्रम में चलने का आग्रह करता है कि आप अपने भुजबल के प्रताप को आश्रम में चलकर देखिए —

'रम्यास्तपोधनानां प्रतिहत विघ्नाः क्रियाः समवलोक्य।
ज्ञास्यसि कियद् भुजो मे रक्षति मौर्वी किणाङ्क इति॥'
(अभि० शाकु० 1|3)

(2) अतिगम्भीर — समुद्र के सामने जिसकी थाह न लग सके, उसे 'अतिगम्भीर' कहते हैं। दुष्यन्त इस गुन से युक्त है। शकुन्तला के रूप-सौन्दर्य में बंध जाने के बाद भी वह अपना विवेक नहीं छोड़ता। उसके मन में विचार आते हैं - ब्राह्मणकन्या के प्रति मेरा आर्य-मन क्यों आकृष्ट हो रहा है —

'असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः।
सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः॥
(अभि० शाकु० - 1|23)

Scanned with CamScanner

सही बात पता लगाने पर प्रसन्न होकर कहता है - 'आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्' इतने समय तक उच्चपदस्थ राजा का धैर्य का निर्वाह करना, अतिगम्भीर व्यक्ति से ही संभव है। आश्रम की रक्षा के अवसर पर माता द्वारा प्रेषित दूत की बात सुनकर अपने प्रतिनिधि के रूप में वह विदूषक को राजधानी भेज देता है, स्वयं तत्परता के साथ आश्रम की रक्षा करता है

(3) चरित्रवान् नायक - प्रियंवदा और अनुसूया के बीच में स्थित शकुन्तला के रूप-सौन्दर्य से प्रभावित दुष्यन्त अपने कुल के अनुरूप उस कन्या को अग्नि के समान स्पर्श के अयोग्य समझता है। वार्तालाप के प्रसंग में जब यह निर्णय हो जाता है कि शकुन्तला ऋषि कण्व की 'औरस' पुत्री है नहीं है तब वह अपनी मनोदशा बताता है। आगे चलकर वह शकुन्तला के उज्ज्वल भविष्य की सुदृढ़ व्यवस्था की सूचना देते हुए कहता है - 'परिग्रह बहुत्वेऽपि द्वे प्रतिष्ठे कुलस्य नः।
समुद्ररसना चोर्वी सखी च युवयोरियम्॥'
(अभि० शाकु० - 3/23)

(4) दृढ़व्रती - किसी भी परिस्थिति में राजा दुष्यन्त अपने वचन-पालन में तत्पर है। दुर्वासा का शाप जो उसकी दृढ़व्रतता के मार्ग में अपवाद स्वरूप उपस्थित होता है, वह सर्वथा अलौकिक है। शाप के कारण वह शकुन्तला को पत्नी रूप में स्वीकार नहीं करता, किन्तु अंगूठी के दर्शन के साथ ही वह विरह से व्याकुल हो उठता है और शकुन्तला तथा अपने पुत्र सर्वदमन को स्वर्ग से लौटते समय मारीच के आश्रम में पाकर अत्यन्त खुश होता है और शकुन्तला से क्षमा याचना भी करता है और उसे पट्टमहिषी के पद पर सुशोभित करता है।

(5) वात्सल्य-भाव - नाटक के सप्तम अंक में दुष्यन्त एक स्नेही पिता के रूप में दृष्टिगोचर होता है। सिंह से खेलते हुए एक निर्भीक बच्चे के प्रति राजा आकृष्ट होता है। जब मारीच उन्हें सौंपते हैं तो आनंदित राजा कहता है - भगवन् । अत्र खलु मे वंश-प्रतिष्ठा।'

Contd- KYB Kyu Kg [illegible]

Scanned with CamScanner